Volume-11, No. 1 Feb.-2024, pp. Hin.07-08

महात्मा गॉधी जी की बुनियादी शिक्षा की वर्तमान में प्रांसगिकता

डॉ.राजकरण सिंह (सहा. प्राध्यापक)
माधव शिक्षा महाविद्यालय ग्वालियर मध्य–प्रदेश भारत।

सार–
महात्मा गॉधी जी की बुनियादी शिक्षा का सबसे अधिक उपयोगिता यह है कि यह देश की समस्याओं को संज्ञान में रखते हुए प्रस्तुत की गयी है। इस शिक्षा योजना में स्वावलम्बन पर सबसे अधिक जोर दिया गया है जिससे भारत की गरीबी को कम किया जा सके। महात्मा गॉधी जी की बुनियादी शिक्षा प्रयोगवादी है इसमें क्रिया द्वारा सीखने Learning by doing पर जोर दिया गया है। महात्मा गॉधी ने बुनियादी शिक्षा के माध्यम से समाज सेवा–श्रम कृषि, हस्तकला, सफाई,सामूहिक जीवन पर अधिक जोर दिया है। उन्होने अपनी योजना प्रस्तुत करते समय यह ध्यान रखा है, कि भारत जैसे निर्धन देश में किस प्रकार की शिक्षा लागू की जा सकती है। हस्त शिल्प आधारित शिक्षा पर जोर देने का अर्थ यह है कि बच्चे आर्थिक, सामाजिक एवं मानसिक रूप से सम्पन्न एवं स्वावलम्बी बनें

मुख्य शब्द– बुनियादी शिक्षा, हरिजन, शारीरिक विकास मानसिक विकास

बुनियादी शिक्षा राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी का देश के लोगों के शैक्षिक अम्युदय का अप्रतिम उपहार है। ब्रिटिश दासता से अभिशप्त भारतीय शिक्षा की दुर्दशा से मर्माहत होकर गॉधी जी ने शिक्षा की एक नवीन योजना 22 व 23 अक्टूबर 1937 को वर्धा में आयोजित अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में प्रस्तुत की है। गॉधी जी ने अपने उद्घाटन भाषण में अपनी बुनियादी शिक्षा योजना की मुख्य विशेषताओं को बताया।

महात्मा गॉधी जी ने 13 मार्च 1937 के "हरिजन" में शिक्षा सम्बन्धी विचार देते हुए बताया कि राष्ट्र के रूप में शिक्षा सम्बन्धी विचार देते हुये बताया कि राष्ट्र के रूप में हम शिक्षा में इतने पिछडें हुए है। कि यदि हमने शिक्षा का कार्यक्रम धन पर आधारित किया हो हम राष्ट्र के प्रति शिक्षा के अपने कर्तव्य को इस पीढी में एक निश्चित समय में पूर्ण करने की आशा नही कर सकते है अतः मैने यह प्रस्ताव करने का साहस किया कि शिक्षा आत्मनिर्भर होनी चाहिए।

उन्होने कहा कि देश की वर्तमान शिक्षा पद्धति किसी भी तरह की आवश्यकताओं को पूरा नही कर सकती है। देश में ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है। जो जन–जीवन में राष्ट्रीय संस्कृति का प्रचार करे। अतः वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोषो को दूर करने के लिए गॉधी जी नें शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन किये। इसी क्रांतिकारी परिवर्तन का नाम बुनियादी शिक्षा है बेसिक शिक्षा के सिद्वान्त महात्मा गॉधी जी के शिक्षा दर्शन पर आधारित है। इस शिक्षा को वर्धा योजना, आधारभूत शिक्षा, नेशनल एजुकेशन, मौलिक शिक्षा और बेसिक शिक्षा के नाम से जाना जाता है।

महात्मा गॉधी ने बुनियादी शिक्षा के द्वारा निम्न उद्वेश्यों को पूर्णता प्रदान की है।

1. बालकों का शारीरिक एवं मानसिक विकास करना।
2. बालकों का हस्त शिल्प के माध्यम से व्यवसायिक विकास करना।
3. बालकों को अपनी संस्कृति के प्रति अनुराग उत्पन्न करना।
4. बालकों को आर्थिक दृष्टि से सबल बनाना।
5. श्रम के प्रति जागरूकता का विकास करना।
6. स्वलम्बन एवं आत्मनिर्भरता के गुणों का विकास करना।
7. सब के उदय (सर्वोदय) हेतु सामाजिक संरचना निर्मित करना।

महात्मा गॉधी जी ने देश की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपने शिक्षा सम्बन्धी विचार व्यक्त किये। यही विचार बेसिक शिक्षा के मूल भूत सिद्वान्त थे।

1. सात वर्ष तक के सभी बालकों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था की जाये।
2. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए।
3. शिक्षा ऐसी हो जिससे विद्यार्थी आत्मनिर्भर हो जाये।

उपर्युक्त प्रस्तावों को कार्य रूप में परिणित करने के लिए डॉ. जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन हुआ। समिति नें एक विस्तृत शिक्षा कार्यक्रम तैयार किया। समिति ने एक रिपोर्ट में बुनियादी शिक्षा का शिक्षकों की शिक्षा, निरीक्षण. परीक्षा पर चर्चा करने के साथ परिशिष्ट में कढाई–बुनाई का पाठ्यक्रम भी प्रस्तुत किया। समिति ने मूलोद्योग, गणित, मातृभाषा, समाजशास्त्र, सामान्य विज्ञान, चित्रकला,राष्ट्रभाषा और संगीत के अध्ययन को विषय के रूप में प्रस्तावित किया।

बुनियादी शिक्षा के द्वारा भारतीय गॉवों को शोषण से और सामाजिक द्वेषों से मुक्त करके इनमें स्वावलम्बी अहिंसक और जनतन्त्रीय समाज की स्थापना करना चाहते थे। वह हमारे बढ़ते हुये ह्रास को रोकेगी और ऐसी न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था की नींव डालेगी जिसमें अमीरों और गरीबों का अस्वाभाविक न हो। प्रत्येक के भरण–पोषण के लिए पर्याप्त आय प्राप्ति के मार्ग को प्रशस्त्र करेगी। यदि यथार्थ में कहा जाय तो बुनियादी शिक्षा बालक में बुनियादी तत्वों के विकास पर जोर देती है।

गॉधी जी ने शिक्षा को उत्पादकता से जोड़ने का जो अद्भभुत कार्य किया उसका आश्रय लेकर ही वर्तमान शिक्षाविद शिक्षा में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य तथा कार्यानुभव की संयोजना का व्यवहारिक पक्ष तलाशने हेतु चिन्तन शील है। माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण की संकल्पना को साकार करने में गॉधी जी के शैक्षिक विचारों एवं शैक्षिक योजना के व्यवहारिक पक्षों को तलाशना होगा। इससे इस संकल्पना को पूर्णता मिल सकती है।

महात्मा गॉधी जी ने बेसिक शिक्षा योजना में अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की जो संकल्पना बनायी उसकों स्वतन्त्र भारत के संविधान में स्थानापन्न किया गया। गॉधी जी ने भारतीयकरण से युक्त जिस शिक्षा योजना का प्रणयन किया था। वह अत्यन्त बेजोड़ थी। वर्तमान समय में पतनोन्मुख होते कुटीर धन्धों, उद्योगों को गॉधी जी के स्वदेशी भावना को अपनाकर पुर्नजीवन दिया जा सकता है। मा. प्रधानमत्रीं नरेन्द मोदी जी इस दिशा में Local for Vocal पर अभूतपूर्व कार्य कर रहे है। वास्तव में गॉधी जी प्रांसगिकता आज भी जीवित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मालवीय डॉ. राजीव "शिक्षा का दार्शनिक एवं समाज राष्ट्रीय परिपेक्ष्य" शारदा पुस्तक भवन प्रयागराज
2. गुप्ता डॉ. एस.बी. एवं गुप्ता डॉ. अलका "शिक्षा का दार्शनिक एवं समाज राष्ट्रीय परिपेक्ष्य" शारदा पुस्तक भवन इलाहबाद 2016
3. पाण्डेय डॉ. रामसकल "शिक्षा के दार्शनिक सिद्वान्त" अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा
4. सक्सैना एन.आर.स्वरूप एवं चुतर्वेदी डॉ. शिखा "उदीयमान भारत में शिक्षण" आर. एल. बुक डिपो मेरठ, 2001